11

मुख्य वचनः 1 कुरिन्थियों 10:16-22; 11:17-34

कुरिन्थियों के लिए पौलुस के निर्देश

प्रभु-भोज के सम्बन्ध में पौलुस की शिक्षा 1 कुरिन्थियों के दोनों भागों में मिलती है (10:16-22; 11:17-34)।[1] हमें प्रभु-भोज में सप्ताह के पहले दिन (प्रेरितों 20:7) आराधना सभाओं के लिए अन्य मसीही लोगों के साथ इकट्ठा होकर लेना अनिवार्य है (1 कुरिन्थियों 11:17, 18, 33, 34; देखें आयत 20)। यह मूल निर्देश देने के अलावा पौलुस ने पहली सदी की कलीसिया में पाई जाने वाली उन समस्याओं पर अभी बात की जो कुरिन्थियों को प्रभु-भोज लेने के समय प्रभावित कर रही थी।

1 कुरिन्थियों 10:16-22

इस हवाले से कुछ मुख्य वाक्यांशों की समीक्षा करने से बाइबल के छात्रों को भोज की पूरी समझ मिल सकती है:

''*धन्यवाद का कटोरा*'' (आयत 16)। ''कटोरा'' से अभिप्राय वह सामान था जो कटोरे में था न कि अपने आप में कटोरे का। लोग कटोरे को नहीं बल्कि जो उसमें है उसे ही पीते थे। हम कटोरे को ''आशीष'' नहीं देते; बल्कि हम कटोरे की चीज़ों से आशीषित होते हैं, जो यीशु के लहू को दर्शाता है।

''*मसीह का लहू*'' (आयत 16)। पौलुस के कहने का अर्थ यह नहीं था कि कटोरा यीशु का लहू था या लहू कटोरे में था बल्कि यह कि कटोरे में से दाख के रस को पीने से आत्मिक रूप में उसके लहू की सहभागिता होती थी।

''*रोटी जिसे हम तोड़ते थे*'' (आयत 16)। रोटी ही थी जो भोज में खाई गई थी। पौलुस ने बताया कि रोटी तोड़ी गई न कि यीशु की देह को। यीशु के शरीर के *प्रतीक* के लिए रोटी का इस्तेमाल करके कुरिन्थियों को आत्मिक रूप में यीशु की देह का सम्मान इस प्रकार करना था जैसे स्वयं वहां हो।

''*मसीह की देह*'' (आयत 16)। पौलुस ने यीशु की देह लिखा आवश्यक पर उसका अर्थ यह नहीं था कि यीशु की देह से रोटी खाई जाती। उसने कहा कि मसीही लोग रोटी को खाते थे न कि वास्तव में यीशु की देह को खाते थे।

''*एक रोटी*'' का उल्लेख दो बार है (आयत 17) जो तत्व की बात है न कि रोटियों की संख्या की। हेनरिक मेयर ने सही कहा है, ''*रोटी की एकता* को *संख्या में* नहीं बल्कि गुण में समझा जाना चाहिए, जैसे भोज की एक वही *रोटी*।''[2] रोटी अर्थात उसी तत्व का खाना भाग लेने वालों को एक करने वाला होना चाहिए, ताकि एक आत्मिक अर्थ में वे एक हो जाएं।

''*एक ही देह*'' (आयत 17)। पौलुस ने मसीह की शारीरिक देह से अपने विचार को

कलीसिया में बदल दिया। मेविन आर. विन्सेंट ने ध्यान दिलाया कि पौलुस शाब्दिक अर्थ अर्थात प्रभु की देह से [आयत 16] प्रतीकात्मक अर्थ अर्थात विश्वासियों की देह अपनी कलीसिया में जा रहा'' था।[3]

''*प्रभु का कटोरा*''(आयत 21)। यह कटोरा ''धन्यवाद के कटोरे'' वाला ही है (आयत 16)। मसीही लोग उसके अन्दर रखी चीज़ को पीते हैं न कि बर्तन को।

''*दुष्टात्माओं का कटोरा*''(आयत 21)। दुष्टात्माओं के सभी पुजारी एक ही कटोरे से नहीं पीते और न ही अलग अलग मण्डलियों में बिखरे हुए मसीही लोग केवल एक ही कटोरे में से पीते हैं। ''कटोरा'' उस तरल को कहा गया है जो ''कटोरे'' के अन्दर है और जिसे वह दर्शाता है, न कि स्वयं कटोरे को।

''*प्रभु की मेज़*''(आयत 21)। ''मेज़'' के पौलुस के प्रतीकात्मक इस्तेमाल से यह सुझाव मिला कि मेज़ पर क्या है न कि यह कि इसका अर्थ मेज़ है। वह यह संकेत नहीं दे रहा था कि प्रभु की केवल एक ही मेज़ है या दुष्टात्माओं की केवल एक मेज़ है।

''*दुष्टात्माओं की मेज़*''(आयत 21)। दुष्टात्माओं की ''मेज़'' प्रभु की ''मेज़'' की तरह मेज़ पर रखी चीज़ के लिए एक अलंकार है। पौलुस के कहने का अर्थ यह नहीं था कि दुष्टात्माओं की केवल एक मेज़; उसने दुष्टात्माओं को भेंट किए जाने वाले भोजनों के लिए जो मूर्तिपूजकों के मन्दिरों में मेज़ों पर दिए जाते थे, ''मेज़'' का इस्तेमाल किया।

इनमें से कुछ अवधारणाओं की गहराई से समीक्षा की आवश्यकता है।

''धन्यवाद का कटोरा''

''धन्यवाद'' (*eulogia*) संज्ञा रूप प्रभु-भोज के सम्बन्ध में केवल 1 कुरिन्थियों 10:16 में ही मिलता है। रोटी (मत्ती 26:26; मरकुस 14:22) और कटोरे (1 कुरिन्थियों 10:16) को ''आशीष'' देने के लिए वैसे ही किया (*eulogeo*) इसका इस्तेमाल किया गया है। ''धन्यवाद'' (*eucharisteo*), जिसका लिप्यंतरण ''यूखरिस्त'' है। कटोरे (मत्ती 26:27; मरकुस 14:23; लूका 22:17) और रोटी (लूका 22:19) के लिए धन्यवाद देने के लिए भी लागू होता है। ''आशीष'' और ''धन्यवाद'' का इस्तेमाल एक-दूसरे के स्थान पर किया गया है। ''आशीष का अर्थ कटोरे के लिए किसी प्रकार की आशीष देने से नहीं बल्कि इस पर की जाने वाली प्रार्थना से जुड़ा है।''[4]

''धन्यवाद का कटोरा'' की पृष्ठभूमि के सम्बन्ध में कम से कम तीन सुझाव दिए गए हैं:

> ... (1) यूनानी भाषा बोलने वाले साम्प्रदाय के भोजनों की पृष्ठभूमि; (2) या तो यहूदी घर में प्रतिदिन का खाना या शायद सम्भवतया यहूदी लंगर का ''विशेष'' रूप ... (3) ... फसह के भोजन का संदर्भ। ... कई लेखक *धन्यवाद के कटोरे* को चार *कटोरों* में से तीसरे के साथ मिलाते हैं, चाहे कइयों का ... तर्क है कि इसका संकेत सम्भवतया फसह का चौथा कटोरा है।[5]

क्योंकि यहूदियों द्वारा फसह के तीसरे कटोरे को ''आशीष का कटोरा'' कहा जाता था, इस कारण कुछ टीकाकारों ने निष्कर्ष निकाला है कि 1 कुरिन्थियों 10:16 में पौलुस के मन में यही

था। यह पौलुस का या तो संयोग हो सकता है या पौलुस द्वारा की गई एक तुलना पर किसी को भी निर्णायक ढंग साबित नहीं किया जा सकता। फसह में तीसरे कटोरे का इस्तेमाल यहूदियों की एक प्रथा थी, क्योंकि पुराने नियम में ऐसा कुछ नहीं कहा गया। पौलुस यहूदी प्रथा में से विशेषकर जब वह एक ऐसी कलीसिया को लिख रहा है जिसमें अधिकतर लोग अन्यजातियों में से हैं, शब्दावली का इस्तेमाल क्यों करेगा? यदि ''धन्यवाद का कटोरा'' वाक्यांश का इस्तेमाल करने के लिए पौलुस का यही कारण था तो उसके ऐसा आम तौर पर करने का यह अपवाद है। नये नियम की प्रथाओं के पूर्वलक्षणों को प्रकाशमान करने के लिए उसने पुराने नियम की शब्दावली का इस्तेमाल किया (रोमियों 12:1; 1 कुरिन्थियों 5:7; इफिसियों 5:2; फिलिप्पियों 2:17), परन्तु परमेश्वर की प्रेरणा रहित परम्पराओं से नहीं।

''रोटी'' से पहले पौलुस के ''कटोरा'' के उल्लेख का प्रभु-भोज के मनाए जाने के क्रम के सम्बन्ध में कोई महत्व नहीं होगा। मेय'र्स सम्भवतया सही था जब उसने सुझाव दिया कि पौलुस ने कटोरे का उल्लेख पहले इसलिए किया क्योंकि उसने ''रोटी के बारे में अधिक विस्तार से'' समझाया ''इसके साथ, विशेषकर रोटी के इस्राएलियों के भाग लेने की चर्चा करते हुए, *मूर्तियों को चढ़ाए गए मास के उसके विषय से मेल खाता होने के कारण।*''[6] अन्य आयतों (मत्ती 26:26-28; मरकुस 14:22-25; 1 कुरिन्थियों 11:23-25)। स्पष्ट दिखाती हैं कि रोटी कटोरे से पहले दी गई थी।

''मसीह के लहू में सांझ''

1 कुरिन्थियों 10:16 में ''सांझ,'' ''सहभागिता'' (KJV) और ''भागीदारी'' (NIV) के अनुवाद *''कोयनोनिया''* से किए गए हैं जिसका अर्थ एक-दूसरे के साथ मिलकर बांटना है (देखें 1 कुरिन्थियों 10:18, 20)।

> कोयनोनिया कलीसिया के अंगों के सदस्यों का कुलयोग नहीं बल्कि कलीसिया के भीतर और इसके द्वारा मध्यस्थता किए जाने में पाया जाने वाला सम्बन्ध, अर्थात सदस्यों और भागों के एक दूसरे का सम्बन्ध या सदस्यों और भागों का पूरी कलीसिया के साथ सम्बन्ध है। ... यह निश्चित रूप में सामान्य वस्तु के रूप में [*koinē*] है जिसमें संगति [*koinōnikoi*] से सम्बन्धित सभी लोग भाग लेते हैं।[7]

पुराने नियम के याजक वेदी के बलिदान किए गए पशुओं के चुनिन्दा अंगों को खाकर वेदी में भाग लेते थे (लैव्यव्यवस्था 8:31)। प्रभु की मेज़ और मूर्ति की मेज़ में से खाने वाले मसीही लोग यीशु और दुष्टात्माओं दोनों के साथ भागीदारी कर रहे थे। पौलुस ने चाहा कि वे विशेष रूप में यीशु, और साथी मसीही लोगों के साथ सांझ करें, न कि दुष्टात्माओं के साथ। ''आराधना या बलिदान के विशिष्ट कार्य के द्वारा सहभागिता पर ज़ोर देने के लिए पौलुस *परमेश्वर के साथ* के बजाय *वेदी के साथ* [ASV] कहता है।''[8]

कटोरा और रोटी यीशु के शरीर और लहू में सहभागिता या सांझ हैं।

> ''मसीह के लहू में भागीदारी'' का अर्थ मसीह के साथ सहभागिता के यादगारी प्रतीक होना चाहिए न कि उसके लहू को वास्तव में पीना, इस तथ्य से स्पष्ट है कि यह भोज

> स्थापित करने के समय मसीह अभी मरा नहीं था और यह भागीदारी उसे स्मरण करने में है न कि उसे पीने में [देखें 1 कुरिन्थियों 11:25]।[9]

प्रभु-भोज के शारीरिक तत्वों को लेते हुए आत्मिक रूप में शामिल होने की आवश्यकता इस अवसर को बपतिस्मे के साथ मिलाती है। शारीरिक रूप में गाड़े जाने और पानी में से जी उठने के समय हृदय से आज्ञापालन आवश्यक है (रोमियों 6:4-18)। जो ''पाप के दास थे'' अब ''धर्म के दास'' बन गए (रोमियों 6:17, 18), और उनके पाप क्षमा हो गए हैं और बपतिस्मे में धो दिए गए हैं (प्रेरितों 2:38; 22:16; कुलुस्सियों 2:12, 13)। बपतिस्मा अपने आप से ऐसा बदलाव नहीं ला सकता यानी मन का बदलना इसके साथ जुड़ा हुआ है।

इसी प्रकार से प्रभु-भोज से हमें आत्मिक रूप में केवल इसलिए लाभ नहीं मिलता कि हमने शारीरिक रूप में इसमें से लिया है। हमें आत्मिक रूप में प्रभु के साथ और एक तर्कसंगत दर्जे तक अपने मसीही साथियों के साथ सहभागिता और संगति रखनी आवश्यक है।

> मसीही लोग प्रभु के साथ और एक दूसरे के साथ सहभागिता के अपने मुख्य काम में सहभागी हैं, यह सहभागिता इतनी अंतरंग और सम्पूर्ण है कि वह कहता है [देखें 1 कुरिन्थियों 10:17]: *इसलिए कि एक ही रोटी है, तो हम भी जो बहुत हैं, एक देह: क्योंकि हम सब उसी एक रोटी में भागी होते हैं*।[10]

''कटोरा,'' ''मेज़,'' और ''रोटी''

''कटोरा,'' ''मेज़,'' और ''रोटी'' के बारे में लिखते हुए पौलुस ने अलंकार का इस्तेमाल किया। साहित्य का यह विशेष उपाय जिसे ''लक्षणा'' कहा जाता है एक तुलना है जिसमें एक शब्द का अर्थ इससे जुड़े किसी शब्द वाला होता है। कटोरे और मेज़ का अर्थ उनमें पाए जाने वाले समान के लिए था। एक रोटी (*artos*) यीशु को अर्थात जीवन की रोटी को कहा गया है। ''देह'' (या ''एक देह,'' जैसा 1 कुरिन्थियों 10:17) के हवाले कई बार कलीसिया के लिए इस्तेमाल हुए हैं (देखें रोमियों 12:5; 1 कुरिन्थियों 12:13, 20; इफिसियों 1:22, 23; 2:16; 4:4; कुलुस्सियों 1:18, 24; 3:15)। यीशु ने जिसे आशीष दी वह कटोरा नहीं बल्कि उसमें रखी चीज़ थी। इसी प्रकार से पौलुस ने मेज़ पर रखी चीज़ की बात की न कि स्वयं मेज़ की (1 कुरिन्थियों 10:21)।

जो लोग रोटी खाते और प्रभु के कटोरे में से पीते हैं वे आत्मिक रूप में उसके साथ और उसकी देह और लहू के साथ सांझ करते हैं। 1 कुरिन्थियों 10:21 में हमें इसका विपरीत मिलता है: जो लोग मूर्तों को बलि किए हुए भोजन खाते हैं वे आत्मिक रूप में उन दुष्टात्माओं के साथ सहभागिता करते हैं जिन्हें वे मूर्तियां दर्शाती हैं।

''दुष्टात्माओं की मेज़''

पौलुस ने लिखा कि कोई व्यक्ति प्रभु के कटोरे और दुष्टात्माओं के कटोरे से पिया प्रभु की मेज़ या दुष्टात्माओं की मेज़ से खा ''नहीं सकता।'' वह दोनों काम करने के बेमेलपन की बात कर रहा था जो हो नहीं सकता बल्कि न कि असम्भावना की। उसके कहने का अर्थ था कि अपनी मेज़ पर आराधना में मूर्तिपूजकों के साथ सहभागिता करने वाला व्यक्ति उन दुष्टात्माओं

की आराधना कर रहा था जो उनकी मेज़ों से सम्बन्धित थे। अन्य आयतों की तरह (लूका 11:7; 1 यूहन्ना 3:9)। ''नहीं सकता'' का इस्तेमाल ''असम्भव'' और ''बिना कठिनाई के नहीं'' के अर्थ में इस्तेमाल किया जाता है। ''पवित्र शास्त्र की बोली में **नहीं सकता** का अर्थ आम तौर पर **नहीं होगा** होता है, ... मत्ती 9:15; 12:34; 16:3 ...।''[11]

आराधना के योग्य केवल परमेश्वर ही है (मत्ती 4:10) इस कारण वह अपने अनुयायियों से अपेक्षा करता है कि वे किसी भी और व्यक्ति या वस्तु की सेवा न करें। यदि हमारी निष्ठा और आदर परमेश्वर को छोड़ किसी भी व्यक्ति या वस्तु को दिए जाते हैं तो इससे उसे जलन होती है; क्योंकि वह जलन रखने वाला परमेश्वर है (1 कुरिन्थियों 10:22; भी देखें निर्गमन 20:5; व्यवस्थाविवरण 4:24; 5:9; 32:16, 21)।

पौलुस ने प्रभु की मेज़ से और मूर्तियों की मेज़ से खाने के बेमेलपन पर ज़ोर दिया (1 कुरिन्थियों 10:16-22)। यदि मसीही लोग काफ़िरों की मेज़ों की मूर्तियों के चढ़ावे खाते हैं तो वे दुष्टात्मा की पूजा करने वाले होंगे थे।

> इस्राएलियों के वेदी पर बलिदान करने और उस बलिदान के भाग को खाने पर (लैव्यव्यवस्था 7:15; 8:31; व्यवस्थाविवरण 12:17, 18) वे बलिदान के पर्व और परमेश्वर की आराधना में भाग लेते और इसका भाग बनते थे। पौलुस कहता है कि उसके कहने का अर्थ यह नहीं है कि किसी मूर्ति को चढ़ाया गया मांस या मूर्ति अपने आप में कुछ है, पर उसके कहने का अर्थ यह है कि जब काफ़िर लोग बलिदान करते हैं, तो वे ऐसा दुष्टात्माओं के लिए करते हैं और वह नहीं चाहता कि मसीही लोग आराधना में दुष्टात्माओं के साथ कोई सांझ करें। क्योंकि दोनों सही नहीं हो सकते, यानी मसीह और दुष्टात्माओं दोनों में भागीदार होना।[12]

बेशक पौलुस की बड़ी चिन्ता यहां प्रभु-भोज नहीं थी (1 कुरिन्थियों 10:16-22), पर उसने दुष्टात्माओं की आराधना में भाग लेने के विरुद्ध कुरिन्थुस के लोगों को चेतावनी देते हुए यही सच्चाइयां बताईं।

1 कुरिन्थियों 11:17-34

1 कुरिन्थियों 11:17-34 में पौलुस ने कुछ सदस्यों के तरीके को सुधारना चाहा जो प्रभु-भोज का सम्मान नहीं करते। खाते हुए मसीह के साथ अपने सम्बन्ध को सुधारने के बजाय वे इसे बिगाड़ रहे थे (1 कुरिन्थियों 11:17)। भोज को सही ढंग से लेने वालों और आत्मिक रूप में इसमें शामिल न होने वालों के अलग-अलग धड़े बन गए हैं। स्पष्टतया जो सही कर रहे थे उनमें और जो नहीं कर रहे थे उनमें फूट पड़ गई थी (1 कुरिन्थियों 11:18, 19; मत्ती 10:34-36; पर विचार करें लूका 12:51-53)।

इस संदर्भ में ''भोज'' (supper) का अर्थ शाम के समय लिया जाना नहीं निकालना चाहिए। यह उस पृष्ठभूमि की बात है जिसमें यीशु ने इसकी स्थापना की न कि इसे मनाए जाने के दिन के समय पर। यह प्रभु का भोज इसलिए है क्योंकि इसे उसी ने स्थापित किया और यह उसके सम्मान में है (1 कुरिन्थियों 11:23-25)।

पौलुस की चिन्ता (11:18)

यह लिखते समय कि ''क्योंकि खाने के समय एक-दूसरे से पहले अपना भोज खा लेता है'' (1 कुरिन्थियों 11:21) पौलुस की क्या चिन्ता थी? इसकी कम से कम तीन सम्भावनाएं हैं:

(1) ''कुरिन्थी लोग प्रभु-भोज से बढ़कर 'प्रीति भोजों' (देखें यहूदा 12) को प्राथमिकता दे रहे थे। अधिक धनवान लोग निर्धनों और या गुलामों के साथ बांटे बिना जो कुछ लाते थे उसे खा लेते थे।''

इस व्याख्या के साथ समस्या यह है कि पौलुस की बड़ी चिन्ता प्रभु-भोज नहीं बल्कि अगापे फीस्ट था। वह निर्धनों के साथ बांटे बिना खाने के लिए कुछ लोगों को सुधार *नहीं* रहा था बल्कि भोज को अपवित्र करने के कारण सुधार रहा था। यदि उसे ज़रूरमंदों की इतनी ही चिन्ता थी तो उसने अधिक धनवानों को अपने भोजन को बांटने का निर्देश क्यों नहीं दिया? स्पष्टतया वे इतने निर्धन नहीं थे कि उनके पास भोजन न हो, क्योंकि उसने उन्हें अपने अपने घरों में खाने को कहा (1 कुरिन्थियों 11:22, 34)। कुछ लोग भोजन लाते थे और दूसरे नहीं लाते थे।

यदि प्रभु-भोज खाने के लिए इकट्ठा हुए मसीही लोगों में सामान्य भोजन स्वीकार्य होता तो पौलुस उन्हें इन भोजनों के खाने के लिए उपयुक्त आचरण के सम्बन्ध में निर्देश देता। इसके विपरीत समस्या प्रभु-भोज के बजाय या उसके साथ अपना भोज खाने के द्वारा प्रभु-भोज का कुछ लोगों द्वारा अपमान किया जाने की थी। वे इसे उपयुक्त सम्मान नहीं दे रहे थे। इसलिए उसने उन्हें प्रभु-भोज को एक खाने में बदलकर अपवित्र करने के बजाय अपने घरों में खाने की सलाह दी। उसकी चिन्ता यह थी कि वे उन सामान्य भोजनों में जिनके शारीरिक लाभ थे और प्रभु-भोज में जो आत्मिक आशिषों के उद्देश्यों से था, अन्तर को समझें। प्रभु के साथ सहभागिता के लिए उनके इकट्ठ से बाहर, अपने-अपने घरों में खाने से उनकी शारीरिक भूख ही मिटनी थी।

एंथनी सी. थिसल्टन ने सही लिखा है, ''हमें आयतों 17-34 को '*अगापे* (प्रीति-भोज)' और 'प्रभु-भोज' पर किसी प्रकार की तारीख की गलती की अवधारणा से नहीं लेना चाहिए।''[13] न्यूमैन इससे सहमत था:

> उस काल में जिसकी गवाही टरटुलियन देता है, वे [अगापे भोजन] यूखरिस्त से जुड़े नहीं थे; वह स्पष्ट कहता है कि प्रभु ने भोजन के अवसर पर सेक्रामेंट की स्थापना की, जबकि कलीसिया ऐसे नहीं बल्कि दिन चढ़ने से पहले इसे मनाती है। सताव के समयों और पसका के उत्सव के मनाए जाने की गुप्त रात्रि-कालीन सेवाओं से अलग थी, यूखरिस्त किसी भी भोजन से पूर्व निरन्तर मनाया जाता था। ... यह नियम कि यूखरिस्त केवल खाली पेट लिया जाए, सामान्य भोजन पहले लेने के किसी भी सम्बन्ध को और विशेषकर अगापे को निकालकर इसे शाम के समय बना देता है जिसका टरटुलियन ने परोक्ष प्रमाण दिया है।[14]

(2) ''कुछ सदस्य प्रभु-भोज एक सामान्य भोजन के रूप में अर्थात प्रभु-भोज के बजाय अपने ही भोज के रूप में खा रहे थे। इस मामले में मेज़ पर कोई और भोजन नहीं होता था; प्रभु-भोज में इस्तेमाल के लिए केवल रोटी और दाख का रस होते थे। लोग यीशु को स्मरण करने के प्रयास के बजाय, या इसके साथ अपने ही पेट की भूख मिटाने के लिए इन प्रतीकों को

खा रहे थे।''

इस व्याख्या की कमज़ोरी यह है कि यह ''खाने के समय एक दूसरे से पहले अपना भोजन खा लेता है'' की पौलुस की बात का जवाब नहीं देती (1 कुरिन्थियों 11:21)। लगता है कि पौलुस के कहने का अर्थ था कि कई लोग अपना अपना भोजन ले आते थे और उसे खा लेते थे। इसके अलावा हमें चकित होना आवश्यक है कि क्या प्रभु-भोज में भोजन के लिए इतनी रोटी और नशे के लिए इतना दाखरस दिया जा सकता था।

(3) ''मसीही लोग अपना अपना भोज लाते थे या भोजन मेज़बान द्वारा उपलब्ध कराया जाता था।'' एच. एल. भोज का यह विचार था। ''सम्भवतया ... पौलुस के कहने का अर्थ था कि सब के मिलकर भोजन का इस्तेमाल करने के बजाय हर कोई अपनी लाई चीज़ें खा लेता था।''[15]

थिस्लटन की टिप्पणियां ध्यान देने योग्य हैं:

> पौलुस सविनय आपत्ति करता है कि *विचाराधीन बात* मनाई जाने वाली पार्टी है या व्यक्तिगत खाना, इस पर उन्हें अपने घरों का इस्तेमाल ऐसे उद्देश्यों के लिए करना चाहिए। क्या वे एक ही घर में दोहरे उद्देश्य वाली घटनाओं को रखने के लिए किसी आर्थिक या सामाजिक कारक से मज़बूर हैं?[16]

उसने दो अवलोकनों के साथ आगे कहा:

> यहां पौलुस दोहरा अन्तर बताता हुआ प्रतीत होता है: (क) यदि आपका घर है तो आपको *प्रभु-भोज* के अपने जश्न के साथ *अतिथियों को खाने के लिए बुलाने के समयों* अर्थात अपने घर कलीसिया के रूप में साथी विश्वासियों के साथ मिलने को नहीं मिलाना चाहिए; (ख) ''पवित्र स्थान'' और आराधना के लिए इकट्ठा होने के रूप में किसी के घर के इस्तेमाल के सम्बन्ध में और स्पष्ट रूप में ''पवित्र समय'' को उसी स्थान के घरेलू इस्तेमाल से नहीं उलझाया जाना चाहिए।[17]

यह सुनिश्चित करने के लिए कि उन्होंने प्रभु-भोज और अपने भोजों के बीच स्पष्ट अन्तर किया है, पौलुस ने उन्हें अपने भोजन अपने अपने घरों में खाने को कहा। उनका आपस में इकट्ठा होना अपनी शारीरिक भूख मिटाने के बजाय आत्मिक उद्देश्य से होना चाहिए था।

पौलुस की प्रतिक्रिया (11:22)

पौलुस ने उन से जो खा रहे थे पूछा, ''... परमेश्वर की कलीसिया को तुच्छ जानते हो, और जिनके पास नहीं है उन्हें लज्जित करते हो?'' (1 कुरिन्थियों 11:22)। क्या उसके कहने का अर्थ यह था कि कुछ लोगों के पास बिल्कुल कुछ नहीं था और वे खाने के लिए खरीद नहीं सकते थे? शायद नहीं, क्योंकि उसने संकेत दिया कि जिनके पास खाने को नहीं था उनके घर में खाना था और वे अपने घरो में खा सकते थे। उसने उन से कहा कि यदि वे भूखे हैं तो घर में खाएं (1 कुरिन्थियों 11:34)। यदि उनके पास खाने को कुछ नहीं था, तो वह और खोलकर नहीं बता सकता था। वह उन्हें ''निर्धन'' (*ptoxos*) कह सकता था और उन्हें घर में खाने को कहने के बजाय ''जिनके पास था'' उन्हें उन निर्धनों के साथ ''जिनके पास नहीं था'' बांटने को

कह सकता था।

उस समय के यातायात के साधनों के कारण, नगर में दूर दूर तक रहने वाले सदस्यों को एक ही समय में पहुंचने में कठिनाई आती होती। हो सकता है कि आराधना सेवाएं काफ़ी लम्बी हों। स्पष्टतया कइयों को भोज को लेने में प्रभु के प्रति उचित सम्मान दिखाने के बजाय अपने पेट की अधिक चिन्ता रहती होगी। वे अपने साथ खाने के लिए कुछ न लाने वाले या देरी से पहुंचने वाले अन्य लोगों की परवाह किए बिना अपना अपना भोजन खाने लगते हैं। पौलुस ने कहा कि उन्हें प्रभु-भोज खाने से पहले दूसरों की राह देख लेनी चहिए। भोजनों के सम्बन्ध में उसने उन्हें याद दिलाया कि उनके अपने घर हैं जहां वे ''खा और पी'' सकते हैं (1 कुरिन्थियों 11:20-22)।

भोज के दौरान साधारण भोजन खाने वाले लोग गड़बड़ी और फूट डालकर दूसरों की आराधना में विघ्न डाल रहे थे। वे यीशु और उन लोगों का अनादर कर रहे थे, जो सच्चे मन से उसे आदर देने का प्रयास कर रहे थे। न केवल वे वफ़ादार मसीही लोगों के प्रति अपमान दिखा रहे थे बल्कि वे उनका भी अपमान कर रहे होंगे जो खाने के लिए कुछ नहीं लाते थे या न खाना चुनते थे, उनके सामने खाकर उन्हें शर्मिंदा करते होंगे।

धीरजवंत होने के बजाय, प्रभु-भोज में भाग लेने वालों को एक दूसरे की प्रतीक्षा करने के लिए कहा गया ताकि वे मिलकर भोज खा सकें। फ्रैड फिशर की टिप्पणी सही है: ''*आपका खाने के लिए इकट्ठा होना* भोज के जश्न को मनाने के लिए निर्देशों से मेल खाता है।''[18]

1 कुरिन्थियों 11:33, 34 में पौलुस ने आयत 21 वाले लोगों को डांट लगाई। जिन्होंने अपना भोज पहले लेकर और इसे प्राथमिकता देकर, अपने भोजनों को प्रभु-भोज से प्राथमिकता दी थी। ''प्रभु-भोज एक सामान्य पर्व नहीं है बल्कि इसे एक स्थान के रूप में भी नहीं बनाया गया है जहां लोग अपनी भूख मिटा सकते हैं।''[19]

पौलुस ने अपने इकट्ठे होने में भाइयों से प्रभु-भोज का सम्मान करके हर सम्भव रुकावट को दूर करने का आग्रह किया।

भोज की स्थापना पर पौलुस की शिक्षा (11:23-26)

कइयों ने सुझाव दिया है कि पौलुस यीशु द्वारा भोज की स्थापना किए जाने के समय वहां नहीं था, इस कारण उसे इसके बारे में दूसरों से पता चला। ऑस्कर कल्मैन ने दावा किया, ''यदि हम उसी के शब्दों पर विश्वास करें (1 कुरिन्थियों 11:23), तो उस पर [यह] एक विशेष प्रकाशन के द्वारा स्पष्ट किया गया था।''[20] पौलुस ने लिखा, ''मुझे प्रभु से मिला,'' जो मामले को ठप्प कर देने वाला होना चाहिए।

प्रभु-भोज का आदर न करने के लिए कुरिन्थियों को डांट लगाने के बाद पौलुस ने भोज के उद्देश्य और अर्थ को समझाते हुए स्थिति को सुधारना चाहा। मसीही लोग एक सामाजिक घटना में भाग लेने या अपनी भूख मिटाने से कहीं बड़े उद्देश्य के लिए इकट्ठा होते हैं। हमें रोटी और कटोरे में उसी भक्तिभाव से भाग लेना चाहिए जैसे हम यीशु के हमारे सामने होने पर उसकी देह और लहू में भाग लेंगे।

यूनानी शब्द सप्पर (*deipnon*; 1 कुरिन्थियों 11:21) या भोज एक संज्ञा शब्द है जिसका अर्थ केवल ''दिन का मुख्य भोजन'' है[21] (देखें मत्ती 23:6; मरकुस 6:21; 12:39)। क्रिया

(*deipneo*; 1 कुरिन्थियों 11:25) का अनुवाद ''सपड'' (KJV), या ''सप्पर'' ऐसे किया गया है जैसे यह संज्ञा हो (NKJV; NASB; NIV)। न तो संज्ञा और न ही क्रिया रूप दिन के समय का संकेत देता है जिसमें भोजन खाया गया था। संज्ञा की परिभाषा, ''भोजन खाना (*दिन के समय या भोजन की किसम के हवाले के बिना*), खाना, डाइन (भोजन) करना लूका 17:8; 22:20; 1 कुरिन्थियों 11:25 ... प्रकाशितवाक्य 3:20.''[22] इसका अनुवाद यीशु द्वारा इसकी स्थापना किए जाने पर दिन के समय के कारण ''लॉर्ड'स सप्पर'' किया गया हो सकता है। पर इसका अर्थ ''प्रभु का भोजन'' या ''प्रभु की दावत'' ही है। ''उसने बियारी (सप्पर) के पीछे कटोरा भी लिया'' (1 कुरिन्थियों 11:25)। बिल्कुल सही अनुवाद है पर बियारी या ''सप्पर'' के ये शब्द एक क्रिया है जिसका अधिक अक्षरश: अनुवाद ''खाना खा लेने के बाद'' या ''खाने के बाद'' होगा। विचार यह है कि यीशु ने प्रभु-भोज की स्थापना से पूर्व फसह का भोज पूरा कर लिया था।

एल्बर्ट बार्नस ने यह निष्कर्ष निकाला:

> ... यह सब पसका के सामान्य भोज को मनाए जाने के *बाद* में हुआ। इसलिए यह इसका भाग नहीं हो सकता, न ही इसे पर्व या केवल दावत कहा जा सकता होगा। प्रेरित ने स्पष्टतया उन्हें यह दिखाने के लिए बताया कि यह नहीं हो सकता, क्योंकि वे इसे दावत के अवसर के रूप में मान रहे होंगे।[23]

यीशु ने बताया कि उसके चेलों को उसके स्मरण में भोज खाना चाहिए (आयतें 24, 25)।

> इस प्रकार जैसे फसह का भोजन इस्राएल में सदा के लिए ''यादगार'' होने के लिए था, वैसे ही यीशु अब वास्तविक इस्राएल के लिए ''यादगार'' फिर से बना रहा है जो उसके द्वारा अपने छुटकारे को ''स्मरण'' रखने के लिए उसके नाम में मेज़ के गिर्द इकट्ठा हो जाते।[24]

कलीसिया प्रभु की मृत्यु को जब तक वह न आए, ''प्रचार करते'' हैं (आयत 26)। ''प्रचार'' (*kataggello*) करने का अर्थ घोषणा करना है। यीशु की मृत्यु का प्रचार करने का एक ढंग प्रभु के मेज़ पर बांटने वालों के लिए उसके क्रूस पर चढ़ाए जाने वालों की बात बताना है। वे मण्डली को याद दिलाते हैं कि रोटी और कटोरा हमारे लिए यीशु के बलिदान को दर्शाते हैं।

पौलुस के अपेक्षित परिणाम (11:27-29, 31-34)

पौलुस की शिक्षा से कुरिन्थुस में प्रभु-भोज के सम्बन्ध में उठी समस्याएं सुलझ जाती यदि वे उसके निर्देश को सही समझकर सही कदम उठाते।

(1) हम ''अनुचित ढंग'' से खाएं या पिएं नहीं (आयत 27)। पौलुस की चिन्ता खाने वालों की अयोग्यता नहीं बल्कि खाने के ढंग के विषय में थी। यीशु की देह और लहू के योग्य कोई नहीं है। खाने वालों को उस समय के महत्व को समझते हुए भक्ति और आदर से खाना आवश्यक है। जैसा कि थिस्सलंटन ने संक्षेप में कहा है, इसे ''यह पुष्टि करने के लिए अपनी जांच करके ही उनकी समझ, व्यवहार और आचरण उस सब में जो मसीह की देह और लहू बताते हैं, कार्य और समझ दोनों के शब्दों में सच्चाई से भाग लेकर [*ek*]।''[25] से हो सकता है।

(2) *''हम यीशु के देह और लहू के दोषी'' न हों।* डेविड प्रायर ने अवलोकन किया:

> आवश्यक रूप में आप मसीह का लहू *बहाने* के दोषी बन जाते हैं: अर्थात आप अपने आपको उनकी संगति में नहीं रखते जो उसके दुख के लाभों में सहभागी हैं, बल्कि उनकी संगति में रखते हैं जो उसे क्रूस पर चढ़ाने के जिम्मेदार हैं।[26]

रिचर्ड बी. हेयस की टिप्पणी इस मामले को बढ़ा चढ़ा कर कह सकती है, पर यह ध्यान देने के योग्य है:

> वे इब्रानियों की पत्री में नष्ट होने वाले मसीही लोगों के सम्मान हैं जिनकी पाप में बने रहने के कारण निन्दा की गई, जो ''परमेश्वर के पुत्र को फिर क्रूस पर चढ़ाते हैं और प्रगट में उस पर कलंक लगाते हैं'' (इब्रा. 6:6)।[27]

किसी भी व्याख्या में स्वयं यीशु पर ज़ोर देने से बढ़कर लहू और देह पर अधिक ज़ोर नहीं दिया जाना चाहिए। परन्तु इन प्रतीकों के लिए सम्मान की कमी व्यक्ति को उस यीशु को समझने में नाकाम कर सकती है जिसका वे प्रतिनिधित्व करते हैं। ''यह सोचना शायद सबसे बढ़िया है कि अपमान प्रभु की देह और लहू का उतना नहीं जितना स्वयं प्रभु का है।''[28]

(3) *हमें भोज में भाग लेने के अपने उद्देश्यों और महत्वों को सुनिचित करने के लिए अपनी ''जांच'' करने में सावधान रहना आवश्यक है* (आयतें 28, 31, 32)। पौलुस यह सुझाव नहीं दे रहा था कि भाग लेने वाली यह तय करने के लिए कि वे योग्य हैं या नहीं अपने जीवनों में पाप के लिए अपने मनों को जांचें। इसके विपरीत उन्हें यह सुनिश्चित करने के लिए कि भोज के सम्बन्ध में उनका व्यवहार और समझ सही है या नहीं अपनी जांच करनी आवश्यक थी। ''यह तय करने के लिए कि व्यक्ति मेज़ के योग्य है या नहीं गम्भीर व्यक्तिगत आत्म निरिक्षण की मांग नहीं की जाती।''[29]

> [अपने आप] को जांचने का अर्थ अपने मन के व्यवहार, अपने बाहरी आचरण, और भोज के वास्तविक स्वभाव और उद्देश्य की अपनी समझ और उद्देश्य की परख करना है। ... अपनी जांच करके विश्वासी इस भोज के महत्व को जो मसीह की मृत्यु को याद दिलाता है, न समझकर अपने ऊपर दण्ड लाने के लिए खाने और पीने के विरुद्ध अपन बचाव करता है।[30]

(4) *हमें खाते समय ''पहचानने'' के लिए समय देना आवश्यक है* (आयतें 29, 30)। ''पहचानने'' (*diakrino*) का अर्थ अन्तर समझना है। पहचानना का इस्तेमाल परख करने के अर्थ में जैसे प्रभु-भोज और सामान्य या आम भोजन में अन्तर करने के लिए किया गया है। हमें अपनी जांच करनी चाहिए (आयत 31)। ताकि हम प्रभु-भोज में इस प्रकार भाग ले सकें जिन से यीशु प्रसन्न हो। इसी शब्द का एक रूप *diakrino* (''दण्ड'') का इस्तेमाल आयत 31 में आयत 29 से अलग संदर्भ में किया गया है, इस कारण कइयों ने इसका आयत 31 में अलग अर्थ चाहा है। आवश्यक नहीं है कि यह सही हो।

> आयत 29 में इस्तेमाल हुए क्रिया के उसी अनुवाद को बनाए रखना थोड़ा अटपटा लगता है, ... पर प्रत्येक संदर्भ में महत्व सचमुच में वही है। पूरी तरह होने वाले (*dia-*) ऐसे न्याय (*-krinein*) के लिए जांच की वस्तु(ओं) का उपयुक्त महत्व है ...।[31]

आयत 31 में परमेश्वर का न्याय यह तय करने के लिए नहीं है कि इसमें भाग लेने वाले लोगों को अनन्त दण्ड मिलेगा क्योंकि वे निर्बल, रोगी और सोए हुए हैं। इसके विपरीत परमेश्वर दण्ड इसलिए देता है ताकि वह अनुचित व्यवहार को सुधारने के लिए अनुशासन ला सके। गोलडर्न फी का अवलोकन है:

> पौलुस के कहने का अर्थ यह नहीं है कि रोगी या मरे हुओं को अनन्त हानि का डर दिया गया है। बल्कि ऐसा ''दण्ड'' ईश्वरीय ''अनुशासन'' के रूप में समझा जाए जिसमें एक प्रेमी पिता अपने बच्चों को सुधार रहा है। ऐसे अनुशासन का उद्देश्य है ''अन्तिम न्याय के समय हम संसार के साथ दण्ड न पाएं। ...''[32]

प्रभु के अनुशासन के सम्बन्ध में यदि यह निष्कर्ष सही है तो पौलुस आयत 30 में उन लोगों की बात कर रहा होगा जो आत्मिक रूप में सोए हुए थे, न कि उनकी जो शारीरिक रूप में मरे हुए थे। क्या परमेश्वर मरे हुओं का अनुशासन इसलिए लाता है कि वे अपने जीवनों को सुधार लें? क्या वे जीवन के अपने धन या भोज के गलत ढंग से खाने में सुधार कर सकते हैं?

यदि हम अपनी जांच करते हैं और भोज को सही ढंग से देखते हैं तो हमें आत्मिक निर्बलता, बिमारी और नींद की अफ़सोसजनक स्थिति से जगाने के लिए प्रभु के अनुशासन की आवश्यकता नहीं होगी। अनुचित ढंग से भोज को खाने वाले लोग आत्मिक रूप में आलसी और निकम्मे हो सकते हैं; इसलिए उन्हें प्रभु के दण्ड और अनुशासन की आवश्यकता है (1 कुरिन्थियों 11:31, 32)।

(5) *हमें ''देह'' पर ध्यान लगाना है।* ''देह'' के अर्थ के सम्बन्ध में तीन सम्भावनाएं दी जाती हैं। पहला, देह कलीसिया हो सकती है। ''यदि देह का अर्थ भोज को मनाने के लिए इकट्ठा हुई कलीसिया के लोग हैं, तो दण्ड इसलिए आता है क्योंकि वे इस संगति के ईश्वरीय स्वभाव में अन्तर नहीं करते। ...''[33] दूसरा यह प्रभु-भोज के सम्बन्ध में हो सकता है, जिसमें '' 'तुम्हारे लिए' यीशु की मृत्यु में भाग लेने वालों के रूप में भाग लेना।''[34]तीसरा, इसका अर्थ यीशु की शारीरिक देह हो सकता है। कहीं और चाहे ''मसीह की देह'' कलीसिया को कहा गया है, पर इस पृष्ठभूमि में ''देह'' का इस्तेमाल कलीसिया के लिए नहीं है (11:24, 27)। यह सच है कि भोज में भाग लेने वालों से कलीसिया के प्रति उचित व्यवहार की मांग की जाती है, पर यहां पर ''देह'' का अर्थ वह देह है जो यीशु ने क्रूस पर दी।

कुछ लोग यह दावा करते हैं कि ''देह'' विश्वासियों की देह है इस बात से सन्तुष्ट हैं कि यदि ''देह'' यीशु की देह के प्रतीक के रूप में भोज की बात करती है, तो ''लहू की बात क्यों नहीं?''[35] ऐसा ही सवाल पूछा जा सकता है कि ''1 कुरिन्थियों 10:21 में पहले मेज़ के सम्बन्ध में केवल कटोरे की बात क्यों हुई थी, रोटी की क्यों नहीं?''

अगली टिप्पणियां प्रभु की देह के पहचानने की नाकामी के विचार को बड़े बेहतरीन ढंग से बताती प्रतीत होती हैं:

सबसे सम्भव व्याख्या लगती है ''यदि वह [भाग लेने वाला] यह समझता नहीं है कि रोटी और दाखरस हमारे लिए प्रभु के स्व-बलिदान को दर्शाते हैं।''[36]

प्रतीकों का अपमान करने का अर्थ उसका अपमान करना है जिसका वे प्रतिनिधित्व करते हैं; और कुरिन्थियों की तरह रोटी और दाखरस का इस्तेमाल करना मसीह की मृत्यु की यादगारों के साथ व्यवहार करना है, और इसलिए जो वे करते हैं वह अपमान के साथ है।[37]

कई लोग [1 कुरिन्थियों 12:13; कुलुस्सियों 1:18] की तरह, *देह* को कलीसिया मानते हैं। परन्तु यह सोचने का कि इस शब्द का अर्थ उससे जो आयत 27 में है अलग होने का कोई वास्तविक कारण नहीं लग रहा।[38]

थोड़ा सा अलग ढंग से फिशर इस व्याख्या से सहमत हैं:

पाप प्रभु-भोज और सामान्य भोजन में अन्तर न कर पाने का नहीं बल्कि उन तत्वों से प्रभु-भोज के प्रतीक को न देख पाना है। रोटी देह अर्थात यीशु के जीवन को दर्शाती है। यदि कोई बिना स्मरण किए उसे खाता है तो उसने *देह को पहचाने बिना* खाया है, पौलुस ने इसके आत्मिक अर्थ को अनुभव किए बिना कलीसिया के संस्कार में लगे होना पापपूर्ण माना।[39]

जो लोग रोटी और कटोरे में यीशु के बलिदान किए गए देह और लहू को नहीं देखते, जिसे वे दर्शाते हैं जिसका वे प्रतीक हैं, वे इसमें भाग लेकर अपने ऊपर दण्ड लाते हैं (1 कुरिन्थियों 11:29)। ''दण्ड'' (*krima*) का अर्थ ''निन्दा'' भी हो सकता है (मत्ती 23:14; लूका 23:40; 1 तीमुथियुस 3:6; यहूदा 4)। दण्ड से बचने के लिए भाग लेने वालों को अपने अन्दर झांकना चाहिए। हमें भोज को खाते समय उपयुक्त भक्ति को दिखाना आवश्यक है।

अनुचित ढंग से खाने के प्रति पौलुस की चेतावनी (11:30)

भोज में उचित और भक्तिपूर्ण ढंग से भाग लेने के लाभ हैं; परन्तु ऐसा न कर पाने का परिणाम निर्बलता, रोग और नींद है (1 कुरिन्थियों 11:30)। क्या पौलुस के कहने का अर्थ यह था कि अपमानपूर्ण ढंग से भोज लेने वाले मसीही लोग शारीरिक कष्ट झेलते हैं, जैसा कि कई टीकाकारों का मानना है, या आत्मिक कष्ट, जो बहुतों द्वारा त्यागा गया विचार है? लोग अयोग्य ढंग से भोज में भाग लेने से शारीरिक रूप में निर्बल, रोगी क्यों होंगे या क्यों मरेंगे? अधिक सम्भावना आत्मिक समस्याओं की है। ध्यान दें कि इन शब्दों का इस्तेमाल कैसे हुआ है।

''निर्बल'' (*asthenes*) शारीरिक रोग या निर्बलता को दर्शाती है (मत्ती 25:39; प्रेरितों 4:9; 5:15)। इसका आत्मिक अर्थ भी है (मत्ती 26:41; रोमियों 5:6; 1 कुरिन्थियों 4:10; 8:7, 10; 9:22; गलातियों 4:9; 1 थिस्सलुनीकियों 5:14)। इस शब्द का संज्ञा रूप ''*astheneia*'' शारीरिक (मत्ती 8:17; लूका 5:15) और आत्मिक निर्बलता (रोमियों 6:19; 8:26; गलातियों 4:13; इब्रानियों 4:15; 5:2; 7:28), दोनों अर्थों में होता है, जैसे क्रिया शब्द *aestheneo* का, जिसका अनुवाद शारीरिक (मत्ती 10:8; 25:36; लूका 7:10; फिलिप्पियों 2:20) या आत्मिक

(प्रेरितों 20:35; रोमियों 4:19; 8:3; 14:1, 2, 21; 1 कुरिन्थियों 8:9, 11, 12) रूप में ''रोगी'' और ''निर्बल'' अनुवाद किया गया है।

''रोगी'' (*arrostos*) का अर्थ मुख्यतया शारीरिक बीमारी है (मत्ती 14:14; मरकुस 6:5, 13; 16:18)।

''नींद'' (*koimao*) का इस्तेमाल शारीरिक नींद (मत्ती 28:13; लूका 22:45; प्रेरितों 12:6) के साथ साथ मृत्यु (मत्ती 27:52; यूहन्ना 11:11; प्रेरितों 7:60) भी किया गया है।

एक और यूनानी शब्द, ''*katheudo*'' भी शारीरिक नींद (मत्ती 8:24; 9:24) और आत्मिक नींद (इफिसियों 5:14; 1 थिस्सलुनीकियों 5:6) के लिए भी इस्तेमाल किया जाता है। लगता है कि कुरिन्थुस के कुछ लोग आत्मिक रूप में निर्बल, रोगी या सो गए थे, क्योंकि वे भोज के आत्मिक महत्व और अर्थ का अपमान कर रहे थे।

सारांश

कुरिन्थुस की कलीसिया में दो बड़ी समस्याएं खड़ी हो गई थीं। कुछ सदस्य उन भोजनों में भाग लेकर जो मूर्तियों के सामने बलिदान किए गए थे, मूर्तियों के मन्दिरों में खा रहे थे। अन्य प्रभु-भोज के लिए उचित सम्मान नहीं दिखा रहे थे। पौलुस ने लिखा कि मूर्तियों के मेज़ों पर इकट्ठा होने वाले और मूर्तियों पर चढ़ाए भोजन खाने वाले मूर्तियों की पूजा में लगे हुए थे। प्रभु की मेज़ और दुष्टात्माओं की मेज़ में से खाकर मसीही लोग यीशु के प्रति निष्ठा को नहीं दिखा सकते थे।

प्रभु-भोज यीशु के स्मरण में खाया जाए। मसीही लोगों को हमें खाने के अपने उद्देश्य को जांचना और आत्मिक लाभों को पाने के लिए इन प्रतीकों के साथ जुड़े आत्मिक अर्थों को समझना आवश्यक है। भोज को सामान्य भोजनों के साथ नहीं मिलाया जाना चाहिए। मसीही लोग जिन्हें भूख लगी हो उन्हें अपने घरों में खाना चाहिए।

मसीह की देह के अंगों को प्रभु की कलीसिया और अपना सम्मान उस यादगार के द्वारा जिसने उसे स्थापित किया प्रभु के प्रत्येक दिन को आदर देना चाहिए।

टिप्पणियां

[1]अतिरिक्त निर्देश जो शायद प्रभु-भोज से सम्बन्धित है, 1 कुरिन्थियों 5:7, 8 में पाए जाते हैं। [2]हेनरिक आगस्त विलहेम मेयर्स, *क्रिटिकल एण्ड ऐक्सेजेटिकल हैंड-बुक टू एपिस्टल टू द कोरिन्थियंस* (न्यू यार्क: फंक एण्ड वैगनल्स, 1884), 228. [3]मेर्विन आर. विन्सेंट, *वर्ड स्टडीज़ इन द न्यू टैस्टामेंट,* अंक 3, द *एपिस्टल ऑफ पॉल* (न्यू यार्क: पृष्ठ नहीं, 1886; मैकलीन, वर्जीनिया: मैक्डोनल्ड पब्लिशिंग कं., तिथि नहीं), 243. [4]वही, 145. [5]एंटनी सी. थिसल्टन, *फ़र्स्ट एपिस्टल टू द कोरिन्थियंस* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 2000), 756. [6]मेयर्स, 228. [7]वरनर एलर्ट, *यूखारिस्त एण्ड चर्च फैलोशिप इन द फ़र्स्ट फोर सेंचुरीस,* अनु. एन. इ. नेगल (सेंट लूईस: कंकोर्डिया पब्लिशिंग हाउस, 1966), 64. [8]विन्सेंट, 243. [9]डब्ल्यू. हैरल्ड, मेर ''1 कोरिन्थियंस,'' द *एक्सपोज़िटर्स बाइबल कमैंटरी,* अंक 10, *रोमन्स-ग्लेशियंस,* सम्पा. फ्रैंक ई. ग्लेबलेन (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ौंडरवन पब्लिशिंग हाऊस, 1976), 251. [10]डेविड प्रायर, द *मैसेज ऑफ़ 1 कोरिन्थियंस* (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोइस: इंटरवर्सिटी-प्रैस, 1985), 174.

[11]रॉबर्ट यंग, ''हिंटस एण्ड हैल्प्स टू बाइबल इंटरप्रिटेशन (परिशिष्ठ क्रम 52)'' *अनैलिटिकल कंकोर्डेंस*

ऑफ़ द बाइबल, 22वां संस्क. (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1970), पृष्ठ नहीं। [12]मेयर्स, 251. [13]थिसल्टन 852. [14]एल्बर्ट हेनरी न्यूमैन, ''अगापे,'' द *न्यू शैफ़-हर्ज़ोग इन्साइक्लोपीडिया ऑफ़ रिलिजियस नॉलेज,* संपा. सेमुएल मेकाउले जैक्सन (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1951), 1:80. न्यूमैन ने टर्टुलियन द *चैपले, 3 और टू हिज़ वाइफ़ 2.5* से उद्धृत किया। [15]एच. एल. गोज, द *फ़र्स्ट एपिस्टल टू द कोरिन्थियस,* वेस्टमिंस्टर कमैंट्रीज़ सम्पा. वाल्टर लॉक 3रा संस्क., संशो. (लंदन: मैथ्यून एण्ड कं., 1911), 99. [16]थिसल्टन, 864. [17]वही, 865. [18]फ्रैड फिशर, *कमैंटरी ऑन 1 एण्ड 2 कोरिन्थियस* (वाको, टैक्सस: वर्ड बुक्स, 1975), 190. [19]एल्बर्ट बार्नस, *नोटस ऑन द न्यू टैस्टामेंट,* 1 कोरिन्थियस, सम्पा. रॉबर्ट फ्रू (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1972), 223. [20]ऑस्कर कलमैन एण्ड एफ़. जे. लीनहार्ड्ट, *एसेज़ ऑन द लॉर्ड'स सप्पर,* अनु. व संपा. जे. जी. डेवीस (कैम्ब्रिज: लटरवर्थ प्रैस, 1958; रीप्रिंट, अटलांटा, जॉर्जिया: जॉन नॉक्स प्रैस, 1975), 17 में ऑस्कर कलमैन, ''द लॉर्ड'स सप्पर एण्ड द डैथ ऑफ़ क्राइस्ट।''

[21]वाल्टर बाउर, *एण्ड ग्रीक-इंग्लिश लैक्सिकन ऑफ द न्यू टैस्टामेंट एंड अदर अर्ली क्रिश्चियन लिटरेचर,* 3रा संशो. व संस्क. फ्रैड्रिक डब्ल्यू. डेंकर (शिकागो: यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो प्रैस, 2000), 215. [22]वही। [23]बार्नस, 215. [24]गोर्डन डी. फी, द *एपिस्टल टू द कुरिन्थियंस* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1987), 553. [25]थिसल्टन, 891. [26]प्रायर, 189. [27]रिचर्ड बी. हेज़, *फ़र्स्ट कोरिन्थियंस,* इंटरप्रिटेशन, ए बाइबल कमैंट्री फार टीचिंग एण्ड प्रीचिंग, सम्पा. जेम्स लूथर (लुईसविल्ले, कैंटकी: जॉन नॉक्स प्रैस, 1997), 201. [28] फ़िशर, 188. [29]प्रायर, 561. [30]मेयर, 260. [31]विलियम एफ. ओर्र एण्ड जेम्स आरथर वाल्थर, *1 कोरिन्थियस,* द एंकर बाइबल (गार्डन सिटी, न्यू यॉर्क: डबलडे एण्ड कं., 1976), 268. [32]फी, 566. [33]ओर्र एण्ड वाल्थर, 274. [34]थिसल्टन, 893. [35]डब्ल्यू. हैरल्ड मेयर, नोटस ऑन 1 कोरिन्थियस, *NIV सटडी बाइबल* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ौंडरवन पब्लिशिंग हाऊस, 1955), 1751. [36]रॉबर्ट जी. ब्रेचर, *ए ट्रांसलेटर'स गाइड टू पॉल'स फ़र्स्ट लैटर टू द कोरिन्थियस* (न्यू यार्क: यूनाइटड बाइबल सोसायटीज़, 1982), 113. [37]आरकिबल्ड रॉबर्टसन एण्ड एल्फ्रेड प्लमर, *क्रिटिकल कमैंटरी ऑफ़ फ़र्स्ट कोरिन्थियस* (एडिनबर्ग: टी. एंड टी. क्लार्क, 1911; रीप्रिंट, 1936), 251. [38]लियोन मौरिस, द *फ़र्स्ट एपिस्टल आफ़ पॉल टू द कोरिन्थियस* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1958), 164. [39]फिशर, 189.